om 6 delhi 1 A B C_Page 1 and 2 16/06/2015 17:40 Page 2

स्वच्छ "मन" ही प्रभु उपवन

सिक्ख धर्म के गुरुग्रन्थ साहेब में भी मन की शुद्धि के लिए कहते हैं कि `सांप अपनी खाल का त्याग करता है परंतु विष का त्याग नहीं करता, बगुला पानी में खड़ा रहकर ध्यान लगाता है परंतु उसके मन में मछली ही रहती है।' जब तेरा अपना मन ही शुद्ध नहीं है तब भला ध्यान और जप से क्या लाभ? इसका अर्थ ये है कि मन सच्चा त्याग मांगता है, मात्र बाह्य त्याग या आडंबर नहीं। मन सच्चा ध्यान मांगता है, मात्र बाह्य दिखावा नहीं। मन सच्चा जप मांगता है, लोगों को बताने के लिए सिर्फ माला फेरकर दिखावा करना नहीं। इस तरह मन की शुद्धि ही सबसे महत्वपूर्ण है।

- ब्र. कु. गंगाधर

इसलिए तो गुरुग्रन्थ साहेब में कहा गया है, कि मन तू जोत स्वरूप है, अपना मूल पहचान।

मन की लीला अपरंपार है, मनुष्य को समझना सरल है लेकिन मनुष्य के मन को समझ पाना बहुत मुश्किल है। व्यक्ति के जीवन की गति, प्रगति या अवनति ये सब मन के साथ जुड़ा हुआ है। अगर मन को उन्मुक्त दिशा में छोड़ दिया जाए या स्वच्छंद बना दिया जाए तो जिसकी कल्पना भी न कर सकें, ऐसे विचार मन में जागृत होते हैं।

महावीर स्वामी ने मन को `तूफानी घोड़ा' के समान बताया है। जब अश्व तूफानी मूड में होता है तब अश्वरोहक को ख्याल नहीं होता कि ये आगे का पैर ऊँचा कर कितना कूदेगा? और वो किस दिशा में दौड़ेगा? उसके मन में पल-पल की जागृति रहती है कि ये तूफानी अश्व उसे कभी भी हवा में फेंक देगा और सिर्फ उसको पीठ पर से ही उड़ा नहीं देगा, बल्कि ज़मीन पर पटक देने के बाद भी पग से उसको मार-मार कर उसके प्राण पखेरू निकाल देगा। इसलिए `महाभारत' के `वन पर्व' में महर्षि वेदव्यास ने कहा है,

``मनः शिघ्रतरं वातात्'' – मन वायु से भी अधिक शीघ्रगामी है।

वहीं महाभारत का काल कहता है कि मन को वश में रखना, ये वायु को वश में रखने जैसा ही मुश्किल है। मन के वशीकरण के लिए महर्षि वेदव्यास ने अभ्यास और वैराग्य के सम्बन्ध में महत्व की बात बताई है।

कई लोग इसे उदासीन वृत्ति कहते हैं। जगत के सम्बन्ध के प्रति उदासीनता। सामान्य व्यक्ति में जगत के उस सम्बन्ध के प्रति उत्साह होता है, ये वृत्तियों का आकर्षण होता है, जबकि उदासीनता को तालीम देने वाला, मन से उन सब चीज़ों व सम्बन्धों से दूर रह सकता है। यहां संत कबीर का स्मरण होता है। उन्होंने कहा है कि ``मन, ये तो मद-मस्त हाथी है, उसे ज्ञानांकुश के द्वारा स्व-वश रखें और विलाषिता को छोड़ स्व-स्वरूप के ज्ञान का शांति फल चाखें''।

स्वयं का भाव संत कबीर इस तरह से प्रकट करते हैं।

`कबीर मनहिं गयंद है, अंकुश दे दे राखो।
विष की बेली परिहारो, अमृत का फल चाखो।।

इस साखी में गागर में सागर की तरह स्वयं के विचारों को दर्शाया है। एक तो मन, ये मदमस्त हाथी जैसा निरंकुश है। उसका अर्थ ही है कि मन को अंकुश में रखने की ज़रूरत है। किस तरह मन को अंकुश में रख सकते हैं, उसके बारे में कबीर कहते हैं कि बारंबार `ज्ञानांकुश' द्वारा उसे स्व-वश रखना चाहिए।

मन को कैसे पहचान सकते हैं? या मन के भावों को किस तरह पहचान सकते हैं? मन में रहा हुआ विकार छः प्रकार से प्रकट होता है, एक तो आकार द्वारा प्रकट होता है, दूसरा गति द्वारा सूचित होता है, मन में कोई विचार तेज़ हवा की तरह चलता है तो वो व्यक्ति भी तेज़ हवा की तरह दौड़ता होगा। उनकी गति भी उसी प्रकार की होगी। मन में अगर कामभाव है, तो वो चेष्टा के द्वारा प्रकट होता है। मन को अच्छा लगे या ना लगे, पसंदगी या नापसंदगी - ये सब व्यक्ति के हाव-भाव में दिखाई देता है। उसी तरह वचन, नेत्र और मुख द्वारा भी विकारों से घिरे हुए मन को भी पहचाना जा सकता है।

नेत्र माना कि आँख भी मन का दर्पण है, मन में जैसा भाव होगा, ऐसा भाव नेत्र में भी प्रज्वलित होगा और आखिर में मुख द्वारा भी वे विकार प्रकट होते रहेंगे।

अगर इस तरह से देखें तो मन भले ही अदृश्य है, फिर भी उसका प्रागट्य दृश्य है। भले ही हम अपनी नज़र से उसे सामने निहार नहीं सकते, फिर भी मन में चलते, संचालित - शेष पेज 6 पर

ड्रामा में हीरो एक्टर बनना हो तो हीरे मिसल बनो

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

बाबा, मुरली, मधुबन यह तीनों हमारे लिए बहुत जीयदान देने वाले हैं। जो अच्छी तरह से मुरली सुनते, पढ़ते हैं बाबा उनको देख खुश होता है। ब्राह्मण है तो कैसा... फिर क्षत्रिय है तो ऊं आ करता है थोड़ा बिचारा, वैश्य को चिंता होगी, शुद्र का नाम नहीं लेना। ज़रा भी अंदर से कोई बुरी बात न हो। जब संगमयुग का ज्ञान मिला, कलियुग की अंत है, सतयुग की आदि है, बीच में हम बैठे हैं या खड़े हैं या चलते-फिरते भी संगम याद है।

संगम पर भटकी हुई आत्मायें बाप से मिली हैं। पहले बुद्धि भटकती थी, अभी बाप के मिलने से मन शांत हो गया, मन शांत हो तब बुद्धि से योग लगे। माया देखती है यह मेरे गुलाम अब परमात्मा बाप के बन गये, अब मैं भी इनको खींचकर वापस ले लूं। माया कितने प्रकार की आती है! अभी हम तो मायाजीत बन गये ना, तो सोचते नहीं हैं। योगाग्नि में माया को जला दिया। उसकी अस्थियों को भी ज्ञान गंगा में डाल दिया। जब किसी की अर्थी को जलाने के लिए शमशान में ले जाते हैं तो अर्थी का मुँह घुमा करके शमशान की तरफ कर देते हैं कि फिर वापस नहीं आना। कितना भी प्यारा होगा तो भी, वो गया तो रोयेंगे भी परन्तु अर्थी वापस यहाँ मुँह न करे, यह बड़ा ध्यान रखते हैं इसलिए बाबा ने जीते जी मारा, जीते जी मर गये तो ब्राह्मण मरजीवा हो गये इसलिए गुरुवार को भोग लगाते हैं ना।

हम ब्राह्मण हैं ना! भोग लगाने की सिस्टम प्यारे बाबा ने तब शुरु कराई जब बाहर की सेवायें शुरु हुई, बाबा ने कहा भोग लगाना चाहिए। पहले तो बाबा का ही समर्पण किया हुआ था, बाबा को देख जो और अच्छी-अच्छी आत्मायें थीं उन्होंने अपने आपको समर्पण किया। अच्छी माना जो बाप को फॉलो करे। फॉलो फादर और सी फादर करना दोनों साथ-साथ है क्योंकि बाप को न देख और कहीं इधर-उधर देखेंगे तो फॉलो उसको करेंगे। हमने और कोई बात देखी या सुनी...तो क्यों देखा, सुना? क्या हमें उसको फॉलो करना है! सी फादर फॉलो फादर का महान मन्त्र, अच्छा यंत्र है। वो यंत्र तो टाइम मनी एनर्जी खर्च किये बिना नहीं मिलते हैं। यहाँ हमारा खर्चा कुछ भी नहीं है और कमाई कितनी है! सेकेण्ड में साइलेंस में उड़के चले जाओ। तो इससे सारी एनर्जी, टाइम, मनी सब सफल होता है। जब मेरा बाबा दिल से निकलता है तो शक्ति आ जाती है। शान्त रहने की भी शक्ति, शान्त रहने से असली शान्ति, निज शान्ति...जिससे शक्ति जमा होती है, शक्तियों को जैसे अवतार बना देते हैं। जैसे मैं पहले कुछ और थी, अभी कुछ और। क्या है अभी, ज़रा भी इतना कोई संकल्प नहीं, वो जो शान्ति है वो शक्तिशाली शान्ति है। वायुमण्डल को शान्त बना देती है।

ड्रामा में हीरो एक्टर बनना हो तो हीरे मिसल बनो। हीरो एक्टर और हीरे मिसल लाइफ सच्चा हीरा क्योंकि आजकल की दुनिया में इमीटेशन है, दिखावा बहुत है। भारत में शुरु शुरु में सबसे पहले जब इमीटेशन हीरे (नकली हीरे) निकले थे, लगते थे जैसे सच्चे हीरे हैं। तो सच्चे हीरों के व्यापारियों को बहुत चिंता लगी, अभी क्या होगा? देखने में भी इतने सुन्दर, शो ज़्यादा पर अन्दर झूठ है। यहाँ भी ऐसे चलते-चलते कई अच्छे हीरे जैसे इमीटेशन बन जाते हैं। तो ऐसे झूठे जो होते हैं वो सच को परख भी नहीं सकते हैं। सच्चा बन भी नहीं सकते हैं। तो यह ज्ञानमार्ग है, भक्तिमार्ग में बहुत मिक्सचर किया, दिखावा बहुत हुआ। भक्ति भी ठगी की करते हैं। तो अभी इस तरह से यहां दिखावा नहीं चाहिए, सम्भालो अपने आपको क्योंकि सच्चाई पर बाबा राज़ी है। न धोखे में आना, न धोखा देना। हीरों के व्यापारियों को बड़ी अच्छी परख होती है इसलिए उन्हें कोई ऐसे ठग नहीं सकते हैं। ऐसे सच्चे व्यापारी कोई विरले ही होते हैं जो झूठ ठगी से उनकी बनती नहीं है। वे अपना व्यपार करना अच्छी तरह जानते है।

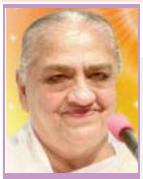
दादी हृदयमोहिनी
अति मुख्य प्रशासिका

जिसके ऊपर भगवान की नज़र पड़ी है, वही तो यहां हैं

इस वरदान भूमि के कोने-कोने में वरदान समाये हुए हैं। इसलिए यहां से सबको बहुत कुछ प्राप्तियां हो जाती हैं। यहां इतना बड़ा परिवार मिलता है, उन सभी ब्राह्मण आत्माओं की शुभ भावनायें और शुभ कामनायें जो एक दो के प्रति हैं, वह भी बहुत कुछ आत्मा में बल भरती है इसलिए इस भूमि का नाम ही है मधुबन, वरदान भूमि। तो जहां वरदान हैं, हर सेकण्ड में, हर कर्म में आप इस वरदान भूमि द्वारा अपने को वरदानों से भरपूर कर सकते हो। अभी कौन, कितना क्या करता है और क्या बनता है, वह तो खुद और खुदा ही जाने। खास यहां पर बेफिकर बादशाह की स्थिति का बहुत अच्छा अनुभव कर सकते हैं, करना चाहिए। यहां से जो जितना भरपूर होकर जाते हैं उतना फिर वह वहां जाकर सबको भरपूर करने की सेवा करते हैं। तो भगवान का वरदान अगर हम नहीं स्वीकार करेंगे तो क्या स्वीकार करेंगे! भगवान के होते भी अगर हम जो बनना चाहें, जो परिवर्तन करना चाहें वह नहीं करते हैं तो कब बनेंगे और क्या करेंगे? तो हमेशा पहले यह सोचना चाहिए कि हमारा स्वमान क्या है? बाबा हमें क्या बनाना चाहते हैं! हमसे क्या कराना चाहते हैं? हम जो चाहते हैं वह क्यों नहीं हो रहा है? गायन है कि जब स्वयं भगवान ने भाग्य बांटा तब तुम कहां थे? तो क्या यह गायन हमारा तो नहीं है? समस्या के समय क्यों, क्या को यूज़ न करके समाधान स्वरूप बनो। ज्ञान को स्पष्ट करने में भल यह क्यों, क्या यूज़ करो, इससे भाषण तैयार हो जायेगा। मैं और मेरा में ममता न हो, नहीं तो बोझिल हो जायेंगे। बोझ से थकते हैं तो फिर कहेंगे बाबा, बाबा... अब कुछ करो। बाबा जो कहते वो न करके हम अपना दूसरा ही कुछ करेंगे तो क्या होगा! इसलिए किसी बात में संशय की उत्पत्ति कभी भी न हो क्योंकि इससे संकल्प हल्के होने कारण ढ़ीले-ढ़ीले पुरुषार्थी रह जाते हैं। फलस्वरूप किसी बात में हमें सफलता नहीं मिलती है। तो बहुत समय का एकरस पुरुषार्थ चाहिए तब ही अन्त मते सो गति अच्छी होगी। इस अकाले मृत्यु के समय में कभी भी किसी का कुछ भी हो सकता है। इसलिए हमें अपनी कमज़ोरियों को खत्म करके विशेषताओं को देखते अपने को विशेष आत्मा बनाने का पुरुषार्थ करना चाहिए। जिसके ऊपर भगवान की नज़र पड़ी है वही तो यहां आकर पहुंचे हैं। इसलिए अभी सभी अपनी विशेषता को जानो और उसको कार्य में लगाओ, अभिमान में नहीं आओ तो विशेषता बढ़ती जायेगी और बुराई दबती जायेगी। इसलिए बाबा कहते हैं आप सदैव अपने स्वमान में रहो। ब्राह्मण जीवन की सम्भाल करो। समय की भी पहचान रखो।

प्रश्नः दादी जी, आपने साइलेन्स की शक्ति को बहुत धारण किया है, बाबा ने आपके द्वारा कई राज़ खुलवाये हैं, आपने ब्रह्मा बाबा की सम्पूर्ण मूर्ति का भी साक्षात्कार किया, आपका उस समय का क्या अनुभव है?

उत्तरः जब से साक्षात्कार का पार्ट शुरु हुआ तो चलते-फिरते अपने को अशरीरी अनुभव करती थी। शरीर के भान में आने की फुर्सत ही नहीं होती थी, चलते-चलते यही नशा रहता था कि बाबा ने हमें क्या बना दिया! बाबा ही बाबा नैनों में समाया हुआ रहता था।

प्रश्नः दादी जी, आप उस समय छोटे थे फिर भी साक्षात्कार के राज़ कैसे समझ जाते थे?

उत्तरः बाबा के सम्पूर्ण स्वरूप के साक्षात्कार में मुझे थोड़ी सी तकलीफ हुई लेकिन साक्षात्कार अव्यक्त बाबा का था। बाबा पूछते वो कैसे हैं? वो कैसे उठते हैं? कैसे बैठते हैं? बाबा मेरे से ही प्रश्न करते, मैं जितना समझ सकती थी उतना ही जवाब देती थी। बाबा ने हमें क्लिफटन में रखा था। बृजइन्द्रा दादी निमित्त थी, वह पूछती थी क्या देखती हो? उनके द्वारा बाबा हमसे पूछते थे, जो मैं बोलती थी वो दादी स्पष्ट करती थी। बाबा पूछते थे मैं तो नीचे बैठा हूँ फिर ऊपर ब्रह्मा कहां से आया? ये तो नई बात थी कि ब्रह्मा बाबा बैठा है और मैं अव्यक्त ब्रह्मा को ऊपर देखती थी।